❍ 16 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *सेवा करते हुए करावनहार की स्मृति में रहे ?*

➢➢ *रूहानी फखुर में रह बेफिक्र बादशाह बनकर रहे ?*

➢➢ *बेहद के बाप से बेहद की गिफ्ट स्वीकार की ?*

➢➢ *अमृतवेले दिलखुश मिठाई खायी ?*

____

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ अभी तक वाचा और कर्मणा की सेवा में जो तेरी-मेरी का, नाम, मान, शान का, स्वभाव, संस्कार का टकराव होता है, समय व सम्पत्ति का अभाव होता है, यह *सर्व विघ्न एकाग्रता के अभ्यास द्वारा मन्सा सेवा करने से सहज समाप्त हो जायेंगे।* रुहानी सेवा का एक संस्कार बन जायेगा।

⊹˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं वृत्ति से वायुमण्डल बनाने वाली मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी अपने को सदा मास्टर सर्वशक्तिवान समझते हुए हर कार्य करते हो? *सदा सेवा के क्षेत्र में अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान समझकर सेवा करेंगे तो सेवा में सफलता हुई पड़ी है क्योंकि वर्तमान समय की सेवा में सफलता का विशेष साधन है - 'वृति से वायुमण्डल बनाना'।*

〰✧ *आजकल की आत्माओंको अपनी मेहनत से आगे बढ़ना मुश्किल है इसलिए अपने वाइब्रेशन द्वारा वायुमण्डल ऐसा पावरफुल बनाओ जो आत्मायें स्वत: आकर्षित होते आ जाएँ।*

〰✧ तो सेवा की वृद्धि का फाउण्डेशन यह है - बाकी साथ-साथ जो सेवा के साधन हैं वह चारों ओर करने चाहिए। *सिर्फ एक ही एरिया में ज्यादा मेहनत और समय नहीं लगाओ और चारों तरफ सेवा के साधनों द्वारा सेवा को फैलाओ तो सब तरफ निकले हुए चैतन्य फूलों का गुलदस्ता तैयार हो जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आज दूरदेशी बापदादा अपने साकार दुनिया के भिन्न-भिन्न देश वासी बच्चों से मिलने आये हैं। बापदादा भिन्न-भिन्न देश वासियों को एक देशवासी देख रहे हैं। चाहे कोई कहाँ से भी आये हो लेकिन सबसे पहले सभी एक देश से आये हो। तो *अपना अनादि देश याद है ना प्यारा लगता है ना! बाप के साथ-साथ अपना अनादि देश भी बहुत प्यारा लगता है ना!*

〰✧ बापदादा आज सभी बच्चों के पाँच स्वरूप देख रहे हैं, जानते हो पाँच स्वरूप कौन-से हैं? जानते हो ना! 5 मुखी ब्रह्मा का भी पूजन होता है। तो बापदादा सभी बच्चों के 5 स्वरूप देख रहे हैं। *पहला- अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप। याद है ना अपना स्वरूप?* भूल तो नहीं जाते?

〰✧ *दूसरा है - आदि देवता स्वरूप पहुँच गये देवता स्वरूप में? तीसरा - मध्य में पूज्य स्वरूप, वह भी याद है?* आप सबकी पूजा होती है या भारतवसियों की होती है? आपकी पूजा होती है? कुमार सुनाओ आपकी पूजा होती है? *तो तीसरा है पूज्य स्वरूप। चौथा है - संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप और लास्ट में है फरिश्ता स्वरूप।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे अज्ञान काल में भी कोई -कोई बच्चों में जैसे कि बाप ही नज़र आता है, उनके बोल-चाल से अनुभव होता है- जैसे कि बाप है। इसी रीति *से जो अनन्य बच्चे हैं उन एक - एक बच्चे द्वारा बाप के गुण प्रत्यक्ष होने चाहिए और होंगे। कैसे होंगे? उसका मुख्य प्रयत्न क्या है?* मुख्य बात यही है जो साकार रूप से भी सुनाई है कि - याद की यात्रा, *अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर हर कर्म करना है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी फखुर में रहना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा स्वयं को मधुबन में डाइमंड हाल में बैठा हुआ अनुभव कर रही हं. और बाबा मिलन की मीठी मीठी यादों में खोई मन बदिध से पहँच

जाती हूँ शिव बाबा के पास परमधाम, यहाँ चारों तरफ फैला हुआ अलौकिक प्रकाश मुझे दिव्यता और परमानंद की अनुभूति करा रहा है... निराकारी दुनिया में मैं आत्मा स्वयं को बिंदु रूप में चमकता हुआ देख रही हूं... बाबा से शक्तिओं का झरना मुझ आत्मा में निरंतर बहता जा रहा और इस ज्ञान स्नान से मुझ आत्मा में पड़ी हुई खाद भस्म होती जा रही है... मैं आत्मा स्वयं को अत्यंत पवित्र और हल्का अनुभव कर रही हूँ...* शक्तिओं से भरपूर हो अब मैं आत्मा नीचे उतर रही हूं और पहुंच जाती हूँ निज वतन... सफेद प्रकाश से ढका हुआ सूक्ष्म वतन यहाँ चारों तरफ शांति ही शांति और बापदादा मेरे सामने फ़रिश्ता स्वरूप में बाहें फैलाये खड़े हैं... *नन्हा फ़रिश्ता बन मैं आत्मा दौड़ कर बाबा की गोद में सिमट जाती हूँ...*

❇ *बाबा मुझे गोद में लेकर मेरे गालों को प्यार से सहलाते हुए मुझ आत्मा से बोले:-* "मेरे नन्हे फूल बच्चे... *संगमयुग मौजों का युग है, बाप आये हैं अपने ब्राह्मण बच्चों का कल्याण करने* इसलिए तो मुझे तुम बच्चे शिव बाबा कहते हो... *शिव का अर्थ ही है कल्याणकारी,* इसलिए सदा फखुर में रहो की विश्व के रचियता बाप ने तुम बच्चों को अपनी गोद दी है... *सारी दुनिया जिस भगवान को ढूंढ रही है तुम बच्चे उस भगवान की पालना में पल रहे हो...*"

➳ _ ➳ *मैं आत्मा आत्मविभोर होकर बाबा की मधुर वाणी को सुनते हुए बाबा से बोली:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... आपने मुझ आत्मा के जीवन में आकर मुझे अपना बनाया है, वाह मेरा भाग्य... *आपकी गोद मिली मानों त्रिलोकी का राज्य मिल गया हो... मेरा जीवन इतना सुंदर पहले कभी न था* आपने आकर इसे दिव्य और अलौकिक बना दिया है... *ज्ञान सागर में स्नान कर अलौकिकता और दिव्यता का प्रकाश मुझ आत्मा से निकल निरंतर विश्व में प्रवाहित हो रहा है...* ज्ञान और वरदानों से श्रृंगार कर मेरे स्वरूप को और निखार दिया है..."

❇ *अपनी बाहों के झूले में झुलाते हुए बाबा मुस्कुरा कर मुझ आत्मा से बोले:-* "सिकीलधे बच्चे... जो भी इन आँखों से दिखाई देता है वो सब खाक होना है , *इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटाकर बस एक बाप की याद में रहो* की अब वापस घर जाना है... बाप आए हैं तुम्हें विश्व की राजाई देने... माया ने तम्हें कंगाल बना दिया है बाप फिर से तम्हें सतयगी वैभव देकर मालामाल

करने आये हैं... *बाप एक ही बार आते हैं, संगम पर इस कल्याणकारी युग का लाभ उठाओ और पुरुषार्थ कर बाप से पूरा वर्सा लो...*"

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा की श्रीमत को धारण करते हुए बाबा से कहती हूँ:-* "हाँ मेरे जादूगर बाबा... *आपकी मीठी मीठी बातों ने ऐसा जादू किया है* जो मैं आत्मा जिधर भी देखती हूं बस बाबा ही बाबा दिखाई देते हैं... *जीवन सुखों से भरपूर हो गया है...* इस ब्राह्मण जीवन को धारण कर मैं आत्मा आनंदित हो गई हूं... *जिस परमात्मा को संसार का हर प्राणी पाने के लिए दर दर भटक रहा है वो परम पिता परमात्मा मुझ आत्मा को मिला है,* ये स्मृति आते ही मुझ आत्मा की खुशी का ठिकाना नही रहता... बाबा आपने मुझे कौड़ी से हीरा बना दिया है... वाह मेरा भाग्य..."

❇ *मेरे हाथों को अपने हाथों में लेकर बाबा मुझे समझानी देते हुए बोले:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... बाप को बहुत तरस पड़ता है जब बच्चे माया से हार खाते हैं... *बाप की श्रीमत पर हर कार्य करो तो माया कभी हरा नही सकती...* तुम्हें एक बाप की याद में रहकर स्वमान की सीट पर सेट रहना है... *बाप परम कल्याणकारी हैं और तुम बच्चे मास्टर कल्याणकारी बन बाप के सहयोगी बनते हो...* बाप को खुशी होती है कि बच्चे बाप में सहयोगी बने हैं... बाप और बच्चे मिलकर विश्व को स्वर्ग बना रहे हैं... ये संगमयुग ब्राह्मणों के लिए कमाई करने का युग है जिसकी प्रालब्ध तुम बच्चे सतयुग में भोगेंगे... संगमयुग ब्राह्मणों के लिए कल्याणकारी है इसलिए सदा फखुर में रहो और निरंतर बाप को याद करो... बाप की श्रीमत को धारण कर औरों को भी कराने की सेवा करो... *ब्राह्मणों को चोटी कहा जाता है दूसरों का कल्याण करना ब्राह्मणों का परम कर्तव्य है , तुम बच्चे भी बाप समान कल्याणकारी बनों...*"

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के महावाक्यों को स्वयं में धारण करते हुए बाबा से बोली:-* "हाँ मेरे प्राणों से प्यारे बाबा... आपकी श्रीमत मेरे ब्राह्मण जीवन का आधार है, *आपकी श्रीमत मिली अहो भाग्य...* मैं आत्मा कितने जन्मों से भटक रही थी आपने मुझे अपना बनाकर मेरा जीवन पवित्रता और परमात्म प्रेम से भर दिया है... *आपको पाकर मैं आत्मा धन्य धन्य हो गयी हूँ...* मैं आपका कितना भी शक्रिया करूँ कम ही लगता है... मेरे जीवन को सवार कर कौडी से

हीरे तुल्य बनाने वाले *बाबा का दिल की गहराई से शुक्रिया कर मैं आत्मा लौट आती हूँ अपने साकारी तन में...*"

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सेवा करते हुए करावनहार की स्मृति में रहना*"

➳ _ ➳ मेरे दिलाराम बाबा के साथ की स्मृति, किसी भी कार्य मे लगने वाली मेहनत से मुझे मुक्त कर हर कार्य को सफलतापूर्वक और बिल्कुल सहज रीति सम्पन्न कर देती है *इसका प्रेक्टिकल अनुभव करते हुए अपने दिलाराम बाबा का दिल से मैं शुक्रिया अदा करती हूँ और उनकी मोहब्बत के झूले में झूलते हुए, उनसे स्नेह मिलन मनाने के लिए मन बुद्धि की उस खूबसूरत यात्रा पर चलने के लिए अग्रसर होती हूँ जो मुझे मेरे दिलाराम भगवान बाप से मिलाने वाली है*। उस यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए, स्वयं को अशरीरी स्थिति में स्थित करने के लिए, मैं देह और देह की दुनिया से किनारा करके, अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करती हूँ और अपनी चेतना को समेट कर अपना सारा ध्यान अपने मस्तक के बीच मे उस प्वाइंट पर केंद्रित कर लेती हूँ जो मुझ आत्मा का निवास स्थान है।

➳ _ ➳ इस देह में भृकुटि के बिल्कुल बीच में अपने मन को एकाग्र करके अब मैं उस प्वाइंट ऑफ लाइट को देख रही हूँ जिसमे से भीना - भीना सात रंगों का प्रकाश निकल रहा है। *मन को गहन तृप्ति का अनुभव करवाने वाले इस प्रकाश की किरणों को मैं धीरे - धीरे मस्तक से बाहर निकलता हुआ देख रही हूँ। इस खूबसूरत प्रकाश की किरणों से मेरे चारों तरफ एक शक्तिशाली औरा बनता जा रहा है। इस औरे में समाये सुख, शांति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द, ज्ञान और शक्ति इन सातों गुणों के वायब्रेशन्स को मैं अपने चारों और वायुमण्डल में फैलता हुआ अनुभव कर रही हूँ*। वायुमण्डल को दिव्य और अलौकिक बनाते ये वायब्रेशन्स एक अदभत रूहानी नशे से मझे भरपर कर रहें हैं।

➳ _ ➳ रूहानी मस्ती में डूबी मैं आत्मा अब अपनी रूहानी यात्रा पर आगे चलने के लिए भृकुटि को छोड़ देह से बाहर आती हूँ और ऊपर की ओर चल पड़ती हूँ। *अपने दिलाराम बाबा से मिलने के सुखद एहसास में खोई मैं चैतन्य शक्ति धीरे - धीरे अपनी रूहानी यात्रा का आनन्द लेते हुए, आकाश को पार करके, सूक्ष्म वतन में प्रवेश करती हूँ। सफेद प्रकाश से प्रकाशित फरिश्तो की इस दुनिया के खूबसूरत नजारों को देखते - देखते मैं इसे भी पार करके पहुँच जाती हूँ अपने मूलवतन परमधाम घर मे*। देख रही हूँ सूर्य के समान चमकते अपनी अनन्त किरणों को बिखेरते अपने महाज्योति शिव पिता को जो मेरे बिल्कुल सामने उपस्थित हैं। उनकी मोहब्बत में खोकर, उनकी किरणों रूपी बाहों में समाने के लिए मैं धीरे - धीरे उनके पास पहुँचती हूँ और उनकी बाहों के आगोश में जाकर समा जाती हूँ।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे अपनी किरणों रूपी बाहों के आगोश में मुझे भरकर बाबा अपना सारा प्यार, अपनी सारी मोहब्बत मुझ पर लुटाने के लिए मुझे अपने बिल्कुल समीप खींच रहें हैं। बाबा की किरणों रूपी बाहों का घेरा टाइट होता जा रहा है और मैं आत्मा बाबा के इतना समीप होती जा रही हूँ कि ऐसा लग रहा है जैसे मैं बाबा में पूरी तरह समा गई हूँ और बाबा का ही रूप बन गई हूँ। *दो बिंदु जैसे एक हो गए हैं। बहुत ही शक्तिशाली स्थिति का मैं अनुभव कर रही हूँ। हर गुण, हर शक्ति से मैं स्वयं को सम्पन्न महसूस कर रही हूँ। बाप समान शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करके अब मैं बाबा की किरणों रूपी बाहों के घेरे से निकल कर बाबा के सामने बैठ गई हूँ*। बड़े प्यार से उन्हें निहारते हुए, अपने ऊपर पड़ रही उनके स्नेह की शीतल फुहारों से मिलने वाली शीतलता का मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने दिलाराम बाबा से इतना मधुर, इतना आनन्दमयी स्नेह मिलन मनाकर, उनके प्यार से भरपूर होकर मैं वापिस साकारी दुनिया मे आ रही हूँ। अपने साकार तन में प्रवेश करके, अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर अब मैं अपने पिता की मोहब्बत के झूले में हर पल झूल रही हूँ। *मेरे दिलाराम बाबा की मोहब्बत मुझे मेहनत से छुड़ा कर सहजयोगी जीवन का अनुभव करवा रही है*। स्वयं को निमित समझ, करनकरावनहार बाबा की याद में रहने से,

स्मृति के कनेक्शन के आधार से, उनसे मिल रही लाइट और माइट पाकर मैं हर कर्म अब डबल लाइट स्थिति में स्थित होकर कर रही हूँ। *तन - मन - धन सब कुछ बाबा को समर्पित करके, ट्रस्टी बन हर कर्तव्य को सेवा समझ कर करने से मैं उड़ता पँछी बन हर सेकेण्ड उड़ती कला का अनुभव कर रही हूँ और मेहनत को मोहब्बत में परिवर्तित कर, अपने दिलाराम बाबा के प्यार के झूले में हर पल झूल रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ज्ञान के साथ साथ गुणों को इमर्ज कर नम्बरवन बनने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सर्वगुण सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव साइलेन्स की पावर को यूज करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव मन्सा सेवा करती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *बापदादा इस वर्ष में जो इस समय तक किया, उसमें संतुष्ट हैं, आफरीन भी देते हैं। लेकिन अभी सेवा में अनुभूति कराना, शमा के ऊपर परवाने बनाना, चाहे सहयोगी बनाओ, चाहे साथी बनाओ, कुछ बनें। अनुभूति की खान खोलो*। अच्छा है - यहाँ तक ठीक है। लेकिन सिर्फ चक्कर लगाने वाले परवाने नहीं बनें। पक्के परवाने बनेंगे -अनुभूति का कोर्स कराने से। इतने तक अनुभूति होती है - बहुत अच्छा है, स्वर्ग है। यही यथार्थ ज्ञान है, नालेज है, इतना सेवा का रिजल्ट अच्छा है। *अभी अनुभूति स्वरूप बन अनुभव कराओ। अनुभव करने वाले अर्थात् बाप से डायरेक्ट सम्बन्ध रखने वाले।* ऐसे अनुभवी परवाने तैयार करो। सहयोगी बनाये हैं, उसकी मुबारक है और बनाओ। यह स्थान है, यहाँ से ही प्राप्ति हो सकती है, इतने तक भी मानते हैं लेकिन बाप के साथ जरा-सा कनेक्शन तो जोड़ो, जो शमा के पीछे ही भागते रहें। तो *इस वर्ष विशेष बापदादा सेवा में अनुभूति कराने का कोर्स कराना चाहते हैं। इससे ही साक्षात्कार भी होंगे और साक्षात बाप प्रत्यक्ष होंगे।* सुना, क्या करना है?

✺ *ड्रिल :- "सेवा में अनुभूति कराने का कोर्स कराना"*

➳ _ ➳ *मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूं... शान्त तन और मन लिए बापदादा के चित्र को देखते देखते उनसे बातें करते हुए बाबा के पास पहुँचती हूँ... अपने घर उस रूहानी लोक में, जहां है... असीम शान्ति, मेरा स्वीट होम* कितना प्यारा कितना न्यारा है... सब कुछ यहां... अपने रोम-रोम में मैं शान्ति का अनुभव कर रही हूं... *अपने बिंदु स्वरूप बाबा से मुझ बिंदु पर निरंतर किरणें आ रही हैं... इन प्रकाश की किरणों में ना जाने कौन सा जादू है... कि मैं आत्मा आनंद की लहरों में लहराने लगती हूँ...*

➳ ➳ *इस अनोखे अलौकिक आनंद में झमती मैं उस ज्योतिर्बिन्द के इर्द

गिर्द घूमने लगती हूं जैसे परवाना शमा के इर्दगिर्द घूमता है* और चाहती हूं कि ये घड़ियां बस अब यहीं रुक जाए... *ये परमात्म आनंद ये अलौकिक सुख..."पाना था जो पा लिया अब और ना कुछ बाकी रहा"...* इसी अनुभूति में लहराती मैं अपनी पाँच तत्वों की काया में प्रवेश करती हूं... *इतने प्यारे इतने रूहानी अनुभव के लिए बाबा को मेरा रोम-रोम धन्यवाद देता है... तभी एक बात जेहन में आती है... जैसे बाबा कह रहे हों बच्चे ऐसी ही अनुभति तुम्हें औरों को भी करानी होगी सच्चे परवाने तैयार करने हैं... जी बाबा!* कह मैं इस सेवा कोर्स को अन्य आत्माओं को कराने की तैयारी में लग जाती हूं...

➳ _ ➳ *बापदादा का हाथ और साथ अपने साथ लिए मैं अपने सेवास्थल पर पहुँचती हूं...* जहाँ मेरे भाई बहन बाबा की याद में बैठे हैं... मुझे इन आत्माओं को वही अलौकिक अनुभव कराना है... *जिस रूहानी यात्रा में मैंने इतना असीम सुख पाया वो इन्हें भी दिलाना है...* मैं अपनी पूरी शुभ भावना और शुभ कामना उनको देती हूं...

➳ _ ➳ बाबा ने जो रूहानी दृष्टि मुझे दी वो मैं अब इन आत्माओं को दे रही हूं... इस दृष्टि को लेते ही सब आत्माएँ रूहानियत के पंख लगा कर बाबा के पास परमधाम में परवाने के जैसे पहुंच रही हैं... *आनंद उत्साह में डूबे ये परवाने उस अलौकिक शमा के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं... झूम रहे हैं... मर मिटने को तैयार हैं...* बाबा की किरणें इन आत्माओं को परम शांति... परम सुख... की अनुभूति करा रही हैं... *बाबा को प्रत्यक्ष अनुभव कर इनके मन सुख, चैन से भर गए हैं सभी इस आनंद रस में भीग रहे हैं...*

➳ _ ➳ वापिस अपनी साकारी दुनिया में आती सभी आत्माएं अपने को *प्रेमधन* से भरपूर कर गुनगुना रही हैं... *"क्या क्या ना पाया बाबा हमने तेरे प्यार में"* इनको प्रभुप्रेम से भरा देख मैं भी हर्षित होती हूं... और अपने प्यारे मीठे बाबा को इस सेवा इस अनुभव के लिए दिल से शुक्रिया अदा करती हूं... *वाह वाह मेरे बाबा वाह वाह* ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔